गुप्तोत्तर काल

गुप्तोत्तर काल में स्वतंत्र राज्यों को उदय

गुप्त साम्राज्य के विखंडन से कई स्वतंत्र राज्यों को उदय हुआ। उत्तरी भारत 5 राज्यों में विभाजित हो गया - मगध के गुप्त शासक, मौखरी, मैत्रक बंगाल के गौड़ शासक और पुष्यभूति।

मौखरी राजवंश:

- पश्चिमी उत्तर प्रदेश में कन्नौज के आस-पास मौखरियों का शासन था।
- उन्होंने भी मगध के कुछ हिस्सों पर विजय प्राप्त की थी।
- उत्तरी गुप्त शासको के द्वारा वे पराजित हुए और मालवा की तरफ निष्कासित कर दिए गए।
- ईशान वरमन तथा इसका पुत्र स्राव वरमन इस वंश के शक्तिशाली राजा थे।
- इन्होंने महाराजाधिराज की उपाधि को ग्रहण की थी।

मैत्रक राजवंश:

- मैत्रको के बारे में यह संभावना लगाई जाती है की ये ईरान के रहने वाले थे और गुजरात में सौराष्ट्र क्षेत्र में शासन किया था। उनकी राजधानी बल्लभी थी।
- इनके शासन काल में वल्लभी ने कला, संस्कृति,व्यापार,वाणिज्य आदि के क्षेत्र में महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल की, जिसने अरबो के आक्रमण तक अपनी उपस्थिति बनाये रखा।

गौड़ राजवंश:

- गौड़ो ने बंगाल के ऊपर शासन किया था।
- गौड़ो का सबसे महत्वपूर्ण और शक्तिशाली राजा शशांक था।
- उसने मौखरियो के ऊपर आक्रमण करके ग्रहवर्मन को को पराजित किया और राज्यश्री को बंदी बना लिया।

पुष्यभूति (वर्धन) राजवंश:

प्रभाकर वर्धन:

- प्रभाकर वर्धन पुष्यभूति वंश का प्रथम शक्तिशाली शासक था, जिसकी राजधानी थानेश्वर थी।
- पुष्यभूति गुप्तों के सामंत थे, किन्तु हूणों के आक्रमण के बाद उन्होंने अपनी स्वतंत्रता की घोषणा कर दी थी।
- प्रभाकर के दो पुत्र राज वर्धन, हर्ष वर्धन तथा एक कन्या राज्यश्री थी।
- उसने मौखरी राजा गृह वर्मन से अपनी पुत्री का विवाह किया था।

राज वर्धन:

- प्रभाकर की मृत्यु के बाद राज वर्धन राजा बना और उसे गद्दी पर आते ही संकटो का सामना करना पड़ा।
- देवगुप्त (मालवा का शासक) ने राज वर्धन के बहनोई (गृह वर्मन) की हत्या कर दी और शशांक (बंगाल का गौड़ शासक) के साथ मिलकर कन्नौज पर अधिकार कर लिया तथा राज्यश्री को बंदी बना लिया।
- राज वर्धन ने देवगुप्त के विरुद्ध अभियान चलाकर, उसे मार डाला, किन्तु शशांक ने उसे धोखा देकर मार डाला।
- इस बीच राज्यश्री मध्य भारत के जंगलों में भाग गई।

हर्ष वर्धन:

- थानेश्वर में अपने भाई की गद्दी पर हर्ष वर्धन बैठा।
- सिंहासन पर बैठते ही उसका प्रथम कर्तव्य था - अपनी बहन राजश्री को बचाना तथा अपने भाई तथा बहनोई की हत्या का बदला लेना।
- उसने पहले अपनी बहन को बचाया, जो आत्मदाह करने वाली थी।

हर्ष वर्धन के सैन्य अभियान:

- हर्ष ने अपने पहले अभियान में शशांक को कन्नौज से बाहर खदेड़ दिया और कन्नौज को थानेश्वर में मिला लिया।
- ध्रुवसेन द्वितीय (वल्ल्भी का शासक) ने पराजित होकर, हर्ष की अधीनता स्वीकार कर ली।
- इसने चालुक्य शासक पुलकेशिन द्वितीय से भी युद्ध किया। किंतु एहोल अभिलेख से प्रमाण मिलते हैं कि इस युद्ध में हर्ष वर्धन की पराजय हुई।
- इसके सिंध के शासक पर भी अपना सैन्य अभियान किया, किंतु इस अभियान में उसके विजयी होने के स्पष्ट प्रमाण नहीं मिलें हैं।
- इसने कश्मीर में भी अपना नियंत्रण स्थापित किया तथा यहां के शासक ने हर्ष वर्धन को उपहार भेजे।
- हर्ष वर्धन ने अपने साम्राज्य को पूर्व में पश्चिमी बंगाल, मगध, उड़ीसा तथा गंजम तक, उत्तर में हिमालय तक, दक्षिण में नर्मदा तक तथा पश्चिम में पंजाब, सिंध, कश्मीर, कामरुप, गुजरात, सौराष्ट्र, राजपूताना तक, फैला दिया था।

त्रिपक्षीय संघर्ष

- हर्ष के शासनकाल से ही कन्नौज पर नियंत्रण उत्तरी भारत पर प्रभुत्व का प्रतीक माना जाता था।
- अरबवासियो के पहले, भारतीय प्रायद्वीप के अंतर्गत 3 महत्वपूर्ण शक्तियां थीं - गुजरात एवं राजपूताना के गुर्जर-प्रतिहार, दक्कन के राष्ट्रकूट एवं बंगाल के पाल शासक।
- कन्नौज पर आधिपत्य को लेकर लगभग 200 वर्षों तक इन 3 महाशक्तियों के बीच होने वाले संघर्ष को ही त्रिपक्षीय संघर्ष कहा गया है।
- इस संघर्ष में अंतिम सफलता गुर्जर-प्रतिहारों को मिली।

बंगाल वंश

पाल वंश:

- पाल वंश की स्थापना गोपाल ने 750 ई. में की थी। यह बौद्ध धर्म का अनुयायी था।
- गोपाल के बाद उसका पुत्र धर्मपाल पाल वंश का राजा हुआ।
- धर्मपाल एक उत्साही बौद्ध था।
- उसके लेखों में उसे परमसौगात कहा गया है।
- उसने विक्रमशिला तथा सोमपुरी (पहाड़पुर) में प्रसिद्ध बौद्ध बिहारों की स्थापना की।
- उसकी राजसभा में प्रसिद्ध बौद्ध लेखक हरिभद्र निवास करता था।
- इसने नालंदा विश्वविद्यालय पुनर्जीवित किया तथा विक्रमशिला विश्वविद्यालय की स्थापना की।
- देवपाल इस वंश का सर्वाधिक शक्तिशाली शासक माना जाता है। कहा जाता है कि उसने गुर्जरों तथा हूणों को पराजित किया और उत्कल तथा कामरुप पर अधिकार कर लिया।
- इस वंश का अंतिम शासक गोविंदपाल था, जिसने 1162-1174 तक शासन किया।

- पाल कलाकारों को काँसे की मूर्तियाँ बनाने में महारथ हासिल थी।
- बंगाल के पाल शासक बौद्ध धर्म (तान्त्रिक) के अनुयायी थे।
- पाल राजाओं का शासनकाल प्राचीन भारतीय इतिहास के उन राजाओं में एक है, जिन्होंने सबसे लम्बे समय तक राज्य किया।
- पाल शासको के समय में संत रक्षित और दीपंकर नामक बौद्ध विद्वानों ने तिब्बत की यात्रा की थी।

सेन वंश:

- पाल राजवंश के पतनोपरान्त बंगाल का शासन सेन राजाओं के हाथ में आ गया।
- इस वंश की स्थापना सामान्तसेन ने की थी।
- सामंतसेन के पुत्र हेमंतसेन ने बंगाल की अस्थिर राजनीतिक स्थिति का फायदा उठाते हुए एक स्वतंत्र राज्य बनाया।
- विजय सेन इस वंश प्रथम महत्वपूर्ण शासक बना। प्रसिद्ध कवि श्रीहर्ष ने उसकी स्मृति में विजय प्रशस्ति की रचना की। इसका शासनकाल 60 वर्षों का था।
- वल्लाल सेन, विजयसेन की मृत्यु के बाद बंगाल का शासक बना। इसे बंगाल में जाति प्रथा तथा कुली प्रथा को संगठित करने का श्रेय प्राप्त है। वल्लाल सेन कुलीनवाद के नाम से प्रसिद्ध एक सामाजिक आन्दोलन का प्रचलनकर्ता भी था। वल्लाल सेन स्वयं एक विद्वान था, उसने दानसागर ग्रन्थ (शकुन-अपशकुन पर आधारित) की रचना की तथा अद्भुत सागर नामक ग्रन्थ (खगोलशास्त्र) प्रारम्भ किया था, पर पूर्ण न कर सका।
- यह सेन वंश का अंतिम शक्तिशली शासक था, लेकिन तबकात-ए-नासिरी के अनुसार इस वंश के वंशज बंगाल के कुछ हिस्सों पर कुछ समय तक शासन करते रहे।

राष्ट्रकूट वंश:

- चालुक्यों के पतन के पश्चात् आठवीं शताब्दी के अन्त में राष्ट्रकूट नरेश दन्तिदुर्ग ने अपनी स्वतन्त्र सत्ता स्थापित कर, मालखेट अथवा मान्यखेट को अपनी राजधानी बनाया।
- कृष्ण प्रथम, ध्रुव, गोविन्द द्वितीय, गोविन्द तृतीय तथा अमोघवर्ष प्रथम आदि इस वंश के प्रमुख शासक हुए।
- कृष्ण प्रथम एक महान विजेता था। उसने गंगो, चोलो, वेंगी के चालुक्यो को बुरी तरह परास्त किया। इसने एल्लोरा में प्रसिद्ध शिव मंदिर का निर्माण करवाया।

राजपूत राज्यों का अभ्युदय

7वीं शताब्दी के पूर्व में हर्ष वर्धन की मृत्यु होते ही अनेक छोटे-छोटे स्वतन्त्र राज्यों का उदय हुआ। इन विभिन्न स्वतन्त्र राज्यों के शासक राजपूत थे। जिन्होंने 1200 ई. तक लगभग 550 वर्ष शासन किया। इस काल को इतिहास में राजपूत युग के नाम से जाना जाता है।

राजपूतो की उत्पत्ति के सिद्धान्त:

- **अग्नि-कुण्ड से उत्पत्ति** - चन्दबरदाई कृत "पृथ्वीराज रासो" वर्णित एक अनुश्रुति के अनुसार राजपूतों की उत्पत्ति एक अग्निकुण्ड से हुई थी। इस अनुश्रुति का वर्णन सिसाणा अभिलेख में भी मिलता है। कथा का सारांश इस प्रकार है जब पृथ्वी राक्षसों से क्लांत हो उठी तब महर्षि वशिष्ठ ने इन राक्षसी का दमन करने के लिए अग्निकुण्ड का निर्माण करके यज्ञ किया। इस अग्निकुण्ड से चार वीर योद्धा प्रतिहार, चालुक्य, परमार तथा चौहान उत्पन्न हुए। इन्होंने वैदिक धर्म की रक्षा का भार अपने ऊपर लिया। भारत के राजपूत इन्हीं चार योद्धाओं की संतान हैं।

- **हिंदू पौराणिक कथाएं** - इनके अनुसार, राजस्थान के राजपूत क्षत्रियों के वंशज या वैदिक भारत के योद्धा थे। राजपूत वंश को दो भागों में बांटा जा सकता है: सूर्यवंशी - भगवान राम के वंशज और चंद्रवंशी - भगवान कृष्ण के वंशज।

- **प्राचीन क्षत्रियों से उत्पत्ति** - गौरीशंकर ओझा ने राजपूतों की उत्पत्ति प्राचीन क्षत्रिय जाति से मानी है। कुछ विद्वानो का विचार है कि क्षत्रिय सामंतों अथवा जागीरदारों की अवैध सजनन राजपुत्र कहलाती थी। ये ही बाद में राजपूत नाम से प्रसिद्ध हुए।

- **विदेशियों से उत्पत्ति** - कर्नल टॉड, भण्डारकर तथा ईश्वरी प्रसाद इस सिद्धान्त के समर्थक हैं। कर्नल टॉड ने राजपूतों की उत्पत्ति विदेशी जाति से मानी है। वे इन्हें शक अथवा सीथियन्स जाति का वंशज बताते हैं। विलियम मुक ने भी टॉड का समर्थन किया है। उसने गुर्जरों तक को विदेशी कहा है, किन्तु गौरीशंकर ओझा ने इस मत का खण्डन किया है।

- **मिश्रित उत्पत्ति** - बी. ए. स्मिथ का मत है कि कुछ राजपूत प्राचीन आर्य-क्षत्रियो के तथा कुछ शक व कुषाणों के वंशज हैं। ये विदेशी जातियाँ भारतीय जातियों में घुल-मिल गई। इनसे उत्पन्न जाति, जिसने तत्कालीन भारत में शासन किया वे राजपूत कहलाए। इस प्रकार कहा जा सकता है कि राजपूतों की उत्पत्ति देशी एवं अनेक विदेशी जातियों के मिश्रण से हुई थी। यही सिद्धान्त सर्वाधिक मान्य भी है।

भारत के प्रमुख राजपूत वंश एवं राज्य

गुर्जर-प्रतिहार वंश:

- आठवीं शताब्दी में नागभट्ट प्रथम ने मालवा में गुर्जर-प्रतिहार वंश के प्रथम शासक के रूप मे शासन किया।
- देवराज, वत्सराज तथा नागभट्ट द्वितीय, इस वंश के अन्य प्रसिद्ध शासक हुए।
- मिहिरभोज प्रतिहार का सर्वाधिक शक्तिशाली एवं प्रतापी सम्राट था। उसने अपने पिता को मारकर सिंहासन हासिल किया था। इसने अपने शासनकाल में कन्नौज को अपनी राजधानी बनाया।
- यशपाल की मृत्यु होने पर इस वंश का पतन हो गया।

चैहान वंश:

- चैहान वंश की अनेक शाखाओं में से 7वीं शताब्दी में, वासुदेव द्वारा स्थापित शाकम्भरी (अजमेर के निकट) के चैहान राज्य का इतिहास में विशेष स्थान है।
- इस वंश की प्रारम्भिक इतिहास एवं वंशावली के बारे में हमें जानकारी विग्रहराज द्वितीय के हर्ष प्रस्तर अभिलेख तथा सोमेश्वर के समय के विजौलिया प्रस्तर लेख से मिलती है।
- इस वंश के प्रारम्भिक नरेश, कन्नौज के प्रतिहारों के सामन्त थे।
- दसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में वाक्यतिराज प्रथम ने प्रतिहारों से अपनी स्वतंत्रता प्राप्त की।
- दिल्ली तथा अजमेर का राज्य उत्तरी भारत का सर्वाधिक शक्तिशाली राज्य था। इस पर चैहान वंश का अधिकार था।
- विग्रहराज तृतीय, अजयराज, विग्रहराज चतुर्थ, बीसलदेव, पृथ्वीराज द्वितीय, पृथ्वीराज तृतीय इस वंश के प्रमुख शासक थे।
- पृथ्वीराज चैहान इस वंश का वीर प्रतापी एवं अन्तिम शासक था, जिसका मुहम्मद गौरी के साथ तराइन का प्रथम एवं द्वितीय युद्ध हुआ। द्वितीय युद्ध में पृथ्वीराज चैहान परास्त हुआ और उत्तरी भारत में पहली बार मुसलमानों का राज्य स्थापित हुआ।

गहडवाल वंश:

- गहडवालों का मूल निवास स्थान विंध्याचल का पर्वतीय वन प्रान्त माना जाता था। यशोनिग्रह ने इस वंश की नींव रखी।
- यशोनिग्रह का पुत्र महिचंद्र या महिन्द्र एक महत्वपूर्ण शासक था, जिसने उत्तर प्रदेश के कुछ भागों पर शासन किया।
- महिचंद्र के पुत्र चंद्रदेव ने राष्ट्रकूट राजा गोपाल को यमुना के तट पर पराजित किया तथा उसने इलाहाबाद से बनारस के बीच के पूरे क्षेत्र पर अधिकार कर लिया। उसने इलाहाबाद को अपने राज्य की दूसरी राजधानी बनाया।
- उसने तुरुक्षदंड नामक एक कर लगाया, जो मुस्लिमों से होने वाले युद्ध पर आने वाले खर्च या उन्हें वार्षिक भुगतान के लिए था।
- गोविन्द चन्द्र इस वंश का सर्वाधिक शक्तिशाली शासक था। उसने पालों से मगध को जीता। उसके शासनकाल में उसके मंत्री लक्ष्मीधर ने कानून और प्रक्रिया पर अनेक पुस्तकें लिखीं, जिनमें से कृत्य कल्पतरु अथवा कल्पद्रुम महत्वपूर्ण हैं।
- जयचन्द्र इस वंश का अन्तिम शक्तिशाली शासक था। 1194 ई. में चन्दावर के युद्ध में मुहम्मद गौरी द्वारा मारा गया। जयचन्द्र ने संस्कृत के विख्यात कवि श्रीहर्ष को संरक्षण प्रदान किया, जिसने नैषेधचरित्र एवं खण्डनखाद्य की रचना की। ऐसा कहा जाता है कि जयचंद्र ने अपनी सुन्दर पुत्री संयोगिता के लिए स्वयंवर का आयोंजन किया था, यद्यपि पृथ्वीराज तृतीय (चौहान वंश का शासक) को आमंत्रित नहीं किया गया था, फिर भी वह राजकुमारी को बलपूर्वक भगा ले गया।

परमार वंश:

- उपेन्द्र इस वंश का संस्थापक था। मालवा इसका शासन प्रदेश था।
- सियक द्वितीय, मुंज, सिंधुराज, भोज, जयसिंह, उदयादित्य इस वंश के अन्य शासक हुए।
- श्रीहर्ष इस वंश का प्रथम स्वतंत्र शक्तिशाली शासक था, जिसने राष्ट्रकूटों को पराजित किया।
- राजा भोज अपनी दानशीलता, कला एवं विश्णनुराग के कारण, इस वंश का सर्वाधिक प्रसिद्ध राजा था। उसने चिकित्सा, गणित व्याकरण आदि पर अनेक ग्रन्थ लिखे।
- 1297 ई. में अलाउद्दीन खिलजी के सेनापति नसरत खाँ तथा उलुग खाँ ने इस साम्राज्य पर आक्रमण कर अधिकार कर लिया।

गुजरात के चालुक्य:

- गुजरात में इस वंश का संस्थापक मूलराज प्रथम था। वह शैव धर्म का अनुयायी तथा कला का आश्रयदाता था। उसने अनेक मंदिरों का निर्माण कराया।
- भीम प्रथम, कर्ण, जयसिंह सिद्धराज, कुमारपाल, भीम द्वितीय इस वंश के अन्य शासक हुए।
- इस वंश के शासक भीम प्रथम के शासनकाल में महमूद गजनवी ने सोमनाथ के मंदिर पर आक्रमण किया था।
- जयसिंह सिद्धराज इस वंश का सर्वाधिक शक्तिशाली एवं कुमारपाल इस वंश के अतिम शासकों में से था।
- इसकी मृत्यु के पश्चात् ही इस वंश का पतन प्रारम्भ हो गया। अन्तिम शासक निर्बल एवं अयोग्य थे।
- 1197 ई. में कुतुबुद्दीन ऐबक ने गुजरात पर आक्रमण कर वहाँ की राजधानी अन्हिलवाड़ को खुब लूटा।

सिसोदिया वंश:

- इस वंश के शासक अपने को सूर्यवंशी कहते थे। इनका मेवाड़ पर शासन था तथा चित्तौड़ इनकी राजधानी थी।
- राणाकुम्भा, राणा संग्राम सिंह तथा महाराणा प्रताप इस वंश के प्रतापी व प्रसिद्ध राजा हुए, जिन्होंने अनेक युद्धों में शत्रुओ के दाँत खट्टे कर दिए। राणाकुम्भा ने अपनी विजयों के उपलक्ष्य में विजय स्तम्भ का निर्माण कराया।